मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- स्वास्थ्य मन्त्री का दौरा, काम अधूरा दिखावा पूरा 3
- शिक्षा से सरकार ने झाड़ा पल्ला
- सरकारी आंकड़ों द्वारा खोखले दावों के बावजूद महंगाई की मार 4
- बैन की राजनीति आईआईटी मद्रास मामला 5
- क्या अंधविश्वास का विरोध नहीं होना चाहिए
- पुलिस आयुक्त पर पड़ी भारी संयुक्त आयुक्त की रिपोर्ट 8

वर्ष 28 अंक 22 फरीदाबाद, वीरवार, 1-15 अक्टूबर 2015 फोन : - 9999595632 2 ₹

पुलिस-नेता गठजोड़, उदासीन अदालतें, शिकार मकान मालिक

सीनाजोर जायदाद हड़पने वालों का पुलिस व नेताओं से गठजोड़ तथा न्यायपालिका की उदासीनता का चलन एक आम आदमी के लिये कितना घातक होता है, इसका उदाहरण है सेक्टर 9 की कोठी नं. 67 के मालिक अशोक अमरनाथ की व्यथा-कथा।

मज़दूर मोर्चा, फरीदाबाद ब्यूरो

पंचकुला में कारोबार करने वाले अशोक अमरनाथ ने फ़रीदाबाद में बसने के लिये 500 वर्ग गज़ के प्लॉट पर एक शानदार कोठी का निर्माण कराया। सन् 2007 में बडौली निवासी सतबीर चंदीला ने अपने आपको सतबीर शर्मा बताकर उक्त कोठी किराये पर ले ली। सेक्टर के मौजिज निवासियों की हाजिरी में बाकायदा इकरारनामा लिखा गया। एक साल किराया देने के बाद सतबीर ने किराया देना बंद कर दिया। अशोक ने बहुत मिन्नत-समाजत की लेकिन चंदीला तो पक्का इरादा कर चुका था कोठी कब्ज़ाने का। अशोक ने न्यायपालिका की शरण ली। सन् 2013 में कोर्ट मेहरबान हुई और पुलिस बल द्वारा मकान मालिक को कब्ज़ा दिलाने के आदेश ज़ारी किये गये।

उस समय थाना सेक्टर 7 में अतिरिक्त एसएचओ था वेद नामक एक सब-इन्सपेक्टर। चंदीला ने उससे सांठ-गांठ कर ली। सांठ-गांठ के तहत जब पुलिस कब्ज़ा दिलाने पहुंची तो कोठी पर ताला लगा देख कर एस.आई. वेद ने कहा कि कोर्ट आदेश में ताला तोड़ने की बात नहीं लिखी है, इसलिये पुलिस इस मामले में कुछ नहीं कर सकती। अशोक इस आदेश को 'ठीक कराने' हेतु कोर्ट के चक्कर काट ही रहा था कि सतबीर चंदीला ने अपने सगे भाई सुरजीत के नाम अशोक की ओर से एक फ़र्जी इकरारनामा तैयार कर लिया। इसे आधार बना कर सुरजीत की ओर से अशोक पर कब्ज़ा न देने का आरोप लगाते हुए भारतीय दण्ड संहिता की धारा 420 व 506 का एक इस्तगासा अशोक के खिलाफ़ कोर्ट में दायर कर दिया। कोर्ट ने दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 202 के तहत पुलिस रिपोर्ट मांगी तो उसी एसआई वेद ने चंदीलों के हक में रिपोर्ट बना कर भेज दी। इस पर कोर्ट ने धारा 420 पर तो नहीं 506 पर संज्ञान ले लिया जो बाद में कोर्ट ने ही खारिज भी कर दिया।

लेकिन उक्त इकरारनामा का दिवानी मामला, जिसके मुताबिक अशोक ने सुरजीत को मकान बेच कर एक बड़ी रकम ले ली थी, कोर्ट में चलता रहा। इस मुकदमें के दौरान भी यह साबित हो गया कि सुरजीत ने अशोक क़े फर्जी दस्तखत किये हैं तथा बतौर गवाह दिखाये गये पुनहाना व डबुआ कॉलोनी निवासी भी झूठे साबित हो गये। इसके बावजूद भी केस एक कोर्ट से दूसरी कोर्ट में अब तक झूल रहा है। उधर अशोक द्वारा कोठी खाली कराने वाला केस स्वत: ठंडे बस्ते में चला गया। इसी बीच अशोक अमरनाथ की मृत्यु हो गयी तो केस संभालने उनके बेटे वैभव अमरनाथ को आगे आना पड़ा।

वैभव मुंबई में अपना करोबार करता है। इस संवाददाता को वैभव ने बताया कि थका देने वाली निरर्थक मुकदमेबाज़ी से तंग आकर उन्होंने किसी जुगाड़ के माध्यम से प्रधानमंत्री कार्यालय में एक दरखास्त लगाई। करीब 8 माह में वह दरखास्त (वाया चंडीगढ) घूमती फ़िरती वापस उसी थाना सेक्टर 7 में पहुंच गयी। लेकिन तब तक वह बदमाश बिका हुआ थानेदार वेद रिटायर हो चुका था, जो अब थाने के बगल वाले सर्वोदय असपताल में चौकीदारा सम्भालने की नौकरी कर रहा है।

वैभव ने बताया कि खुशकिस्मती से इस बार (प्रधानमंत्री कार्यालय से आई) उसकी दरखास्त सब इंस्पेक्टर जगबीर के हाथ लग गयी। सतबीर व सुरजीत जब एसआई जगबीर को किसी तरह भी अपनी गैर कानूनी साजिश में शामिल न कर सके तो उन्होंने विधायक मूलचंद के भाई टिप्पर चंद का सहारा लिया। टिप्पर चंद द्वारा दिये गये लालच, दबाव व धमकी के बावजूद जगबीर ने अपनी रिपोर्ट में सारी सच्चाई को आधार बना कर सतबीर व सुरजीत के विरुद्ध भारतीय दण्ड संहिता की धारा 419, 420, 467, 468, 471 व 120 बी के तहत मुकदमा दर्ज करने की सिफ़ारिश कर दी।

सिर पर लटकती तलवार से परेशान दोनों चंदीला भाईयों ने टिप्पर एवं मूलचंद पर दबाव बनाया। इसी दबाव के तहत उच्चाधिकारियों ने जगबीर से यह केस लेकर उससे कनिष्ठ अधिकारी एएसआई वेद (चौकी इन्चार्य सेक्टर 7) को दे दी। वेद जगबीर की रिपोर्ट को खारिज करने की स्थिति में तो नहीं था, लेकिन ऊपरी दबाव के तहत उसने अपनी ओर से एक गुमराह करने वाली रिपोर्ट और इसके साथ जोड़ दी।

जून 2015 में एसआई जगबीर द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट को अब राजनीतिक दबाव में उच्चाधिकारी इधर से उधर भटका कर रफ़ा-दफ़ा करने के फ़ेर में हैं। पुष्टि तो नहीं हो पाई लेकिन चर्चा है कि शिक्षा मन्त्री रामबिलास शर्मा, जो कि टिप्पर चंद के करीबी रिश्तेदार हैं। द्वारा भी दबाव डलवाया जा रहा है।

क्या यह चिन्ताजनक बात नहीं है कि प्रधानमंत्री कार्यालय से आई दरखास्त का यह हश्र है तो छोटी-मोटी दरखास्तों का क्या होता होगा? दरअसल तमाम सरकारी अफ़सर यही मान कर चलते हैं कि प्रधानमंत्री कार्यालय से 8-10 माह तक घूम फ़िर कर आई दरखास्त का जो मर्जी कर दो, प्रधानमंत्री कार्यालय को कहां फ़ुर्सत है जो मुड़ कर किसी हरामखोर की गर्दन नापे।

ख़बर दार

इस बार काल्पनिक साक्षात्कार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

जन्म	:	23 जनवरी, 1897
मत्यु	:	18 अगस्त, 1945
पुर्नजन्म	:	18 सितम्बर, 2015

म.मो.-**बधाई** हो नेता जी। 18 सितम्बर 2015 को अपका पुनर्जन्म हुआ है। ममता बनर्जी ने बरसों से रिकार्ड रूम में पड़ी आपकी 64 फ़ाइलें सार्वजनिक कर दी और सारे देश में आप पुनर्जीवित हो उठे।

नेता जी-सच बताऊं कहीं का नहीं छोड़ा इन्होंने मुझे। ये संघी और भाजपाई सबको यह बताते फ़िर रहे हैं कि पकड़े जाने या मौत के डर से मैं छिपता घूम रहा था। क्या मैं इतना बड़ा कायर हूं? मैं तो पनडुब्बी में बैठकर अंग्रेजों की नज़रबंदी से बाहर गया था। अपने दम मैंने आज़ाद हिंद फ़ौज खड़ी की थी। मेरा नारा भूल गये-तुम मुझे खून दो मैं तम्हें आज़ादी दूंगा। लानत है जो मेरी जयजयकार की आड़ में मुझे कायर सिद्ध करने पर लगे हुए हैं।

म.मो.-आपके भाई-भतीजों और अवसरवादी चमचों की देखा-देखी अब लाल बहादुर शास्त्री के वारिस भी उनकी मौत को भुनाने की जुगत भिड़ाने में लग गये हैं। इस पर आपका क्या कहना है?

नेता जी-अरे भई मुझे क्या कहना है। ये शास्त्री जैसे ईमानदार व्यक्ति के साथ भी वही कर रहे हैं जो मेरे साथ किया है। शास्त्री ने बहादुरी से युद्धकाल में देश को सशक्त नेतृत्व प्रदान किया था। अब उनकी मौत को भी कायराना बताने वालों को क्या कहें?

म.मो.-कहते हैं फ़ैजाबाद में रहने वाले गुमनामी बाबा उर्फ़ भगवान जी, जो 16 सितम्बर 1985 को स्वर्गवासी हुए, ही दरअसल नेता जी थे। यदि ऐसा था तो आप इस तरह छिप कर क्यों रहे?

नेता जी-क्या मैं कोई अपराधी हूं जो अपने देशवासियों से छिप कर रहूंगा? आज़ादहिन्द फ़ौज का सिपाही से लेकर जनरल तक हर फ़ौजी गर्व से देश के समक्ष आया और देशवासियों ने उसे हाथों-हाथ लिया। फ़िर भला मैं क्यों छिप कर रहता?

म.मो.-तो यह गुमनामी बाबा की कहानी कैसे शुरू हो गयी?

नेता जी- मुखर्जी कमीशन ने पूरी जांच तो की थी। फ़ैजाबाद के दो स्थानीय अखबार, 'नये लोग' और 'जनमोर्चा' ने आपसी प्रतिस्पर्धा में यह कहानी गढी और इस पर खूब विवाद चलाया। वहीं से हिन्दुत्ववादियों ने यह झूठ सारे देश मैं फ़ैलाना शुरू कर दिया। सोचो, मुझे कितना दुख होता होगा। ऊपर से मेरी जय बोलते हैं और वास्तव में मुझे कायर दिखाते हैं।

म.मो.-आपके नजरिये से देश का सबसे बड़ा दुश्मन कौन है? आज़ादी से पहले तो संघी और हिन्दू महासभाई कहा करते थे कि अंग्रेज देश के दुश्मन नहीं हैं। असली दुश्मन मुसलमान, ईसाई और कम्युनिस्ट हैं।

नेता जी-मैंने तो अपने भाषणों में लगातार कहा है कि मुल्क और इन्सानियत के लिये हिन्दुत्व सबसे बड़ा खतरा है। यहां तक कि साम्राज्यवाद और पूंजीवाद भी इतना बड़ा खतरा नहीं हैं।

हिन्दुत्व को मुल्क और इंसानियत के लिये सबसे बड़ा खतरा बताया नेताजी ने

अन्तर्ध्यान होने से पहले सुभाष चन्द्र बोष ने बंगाल में 24 परगना युवा सम्मेलन को सम्बोधित किया था। अब ममता बनर्जी सरकार ने जो 64 फ़ाइलें सार्वजनिक की हैं, उनमें इस भाषण का पुलिसिया रिकार्ड हूबहू मिलता है। नेता जी मान रहे थे कि हिन्दुत्व से देश को बड़ा खतरा है। उन्होंने बंगाली युवाजनों को चेताया कि हिन्दू महासभा और संघ परिवार का मुकाबला डट कर नहीं किया तो पूरा देश जलेगा नफ़रत की आग में और खून की नदियां बहेंगी।

इस भाषण से पता चलता है कि आज़ादी पाने के लिये वे हर जंग लड़ने को तैयार थे। उन्होंने दुनिया भर की घटनाओं का विश्लेषण किया। पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के गढों को ढहाने के लिये वे स्टालिन के साथ हिटलर की मोर्चाबंदी को रणनीतिक तौर पर सही मान रहे थे।

फिलहाल 135 फ़ाइलें केन्द्र सरकार के कब्जे में कैद हैं। जाहिर है उनसे नेहरू को सुभाष का हत्यारा साबित नहीं किया जा सकता। अन्यथा, पहले की वाजपेयी सरकार और अब की मोदी सरकार इनको कब का सार्वजनिक कर चुकी होती। हो सकता है कांग्रेसी सरकारों को भी अपने पापों का घड़ा फूटने का डर रहा होगा। लेकिन संघ परिवार को उससे बड़ा डर है कि सच उज़ागर हो गया तो नेता जी उसके हिन्दुत्व एजेंडा के लिये ज़िंदा या मुर्दा बेहद भारी पड़ने वाले हैं।

सावरकर की हिन्दू महासभा से राष्ट्र को सबसे बड़ा खतरा बताते हुए नेताजी ने कहा ''भारतीय राष्ट्रवाद का यह शत्रु तत्व है और इसे हटाने की हमारी चुनौती है। आज हिन्दू महासभा मुस्लिम विद्वेष से प्रेरित अंग्रेजी हुकूमत के साथ खड़ी दिख रही है। उनका एक ही मकसद है किसी भी तरह मुसलमानों को सबक सिखाना। इस मकसद को हासिल करने के लिये वे अंग्रेजों का साथ देने में हिचकिचायेंगे भी नहीं। अंग्रेजों की कदमबोसी करने से भी उन्हें खास परहेज नहीं है। मुसलमान हमारे दुश्मन हैं और अंग्रेज हमारे दोस्त हैं, यह मानसिकता हमारी समझ से बाहर है।''